उपसंहार

'संगीत मकरंद' में कई उल्लेखनीय तत्व हैं जिन पर सावधानीपूर्वक शोध के बाद विचार किया गया है । यहां मैं इन विषयों पर चरण दर चरण एक बार फिर प्रकाश डाल रही हूं। "संगीत मकरंद" एक संक्षिप्त संगीत रचना है जिसमें दो अध्याय हैं, जिनमें से प्रत्येक में चार खंड हैं। यह नारद उद्धरणों का संग्रह नहीं है, बल्कि एक अकेली, व्यापक पुस्तक है। 'संगीत मकरंद' अभी तक किसी रचना का विषय नहीं बनी है। इस कृति का अपना नाम है और यह नारद के कई विशिष्ट और अलग-अलग दृष्टिकोणों से बनी है जो किसी अन्य कृति में मौजूद नहीं हैं। "संगीत मकरंद" के समान कई संक्षिप्त रचनाएँ मौजूद हैं, जैसे "ओउमापटम," "दत्तिलम," "संगीत चूड़ामणि," "वीणा लक्षणम," इत्यादि। नतीजतन, इस कार्य का आकार इस सुझाव का समर्थन नहीं करता है कि यह एक संकलन है। मूल पांडुलिपि, जो अत्यंत अस्थिर और क्षतिग्रस्त रूप में हो सकती है, प्रतिलिपि में उपलब्ध है। परिणामस्वरूप, नकल करने वाले ने "संगीत रत्नाकर" और अन्य, (जहाँ तक वह बता सकता था) के कुछ हिस्सों को "संगीत मकरंद" की क्षतिग्रस्त मूल पांडुलिपि से पूरी तरह से लिखित छंदों में से ले लिया। क्योंकि कुछ श्लोक बिल्कुल निरर्थक हैं। कई संगीतकारों ने अपने कार्यों के लिए सामान्य शब्द नारद का उपयोग किया है। लेकिन लेखक नारद "संगीत मकरंद" को किसी विशिष्ट समय सीमा में रखने के लिए कोई संकेत नहीं देते हैं। 'संगीत मकरंद' कार्य तिथि फिलहाल अज्ञात है। तर्कसंगत और ठोस तर्कों के साथ आंतरिक और बाह्य माहिती का खजाना प्रदान करने के बाद, मैंने "संगीत मकरंद" को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा है। 'संगीत रत्नाकर' की तुलना में 'संगीत मकरंद' की प्रधानता गांधार ग्रामों द्वारा प्रदर्शित की गई है, और शारंगदेव ने नारद से उद्धृत तथ्यों को कैसे व्यवस्थित किया। नारद द्वारा विद्वानों और संगीतकारों (मात्र गुप्त, लगभग 550 ई.) के नामों का उल्लेख इंगित करता है कि यह काम छठी शताब्दी से पुराना नहीं है। नारद की संगीत प्रणाली के अतिरिक्त सिद्धांत यह स्थापित करते हैं कि यह तिथि नौवीं या ग्यारहवीं शताब्दी के बाद की नहीं है। महामहेश्वर के नाम के प्रकट होने के साथ 'संगीत मकरंद' समय के साथ आगे बढ़ता है। इस पर गहन चर्चा की गई है, विवाद का प्राथमिक मुद्दा यह है कि अभिनव गुप्त का नाम शिक्षाविदों और कलाकारों की सूची से गायब है। यदि नारद ने महामहेश्वर के नाम की घोषणा की थी- एक अपेक्षाकृत सामान्य तथ्य जिसके लिए किसी के समर्थन की आवश्यकता नहीं है- तो वे इसका उल्लेख कर सकते थे। विद्वानों ने मुख्य रूप से अभिनव गुप्त का काल (दसवीं शताब्दी ईस्वी) से पहले का बताया है। इसलिए शोधार्थी द्वारा 'संगीत मकरंद' को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा गया और यह पुष्टि की गई है कि गांधार ग्राम मूर्छनाओं का उपयोग किया गया है, जिनकी चर्चा 'संगीत मकरंद' मे की गई है, और उनके राग में भी उपयोग किया गया है। यदि नारद ने महामहेश्वर का नाम कहा था-और एक बहुत ही सामान्य तथ्य के लिए जिसे किसी के सत्यापन की आवश्यकता नहीं है-तो वह इसे ला सकते थे। विद्वानों

ने मुख्य रूप से अभिनव गुप्त (दसवीं शताब्दी ईस्वी) से पहले "संगीत मकरंद" की नियुक्ति पर आपत्ति जताई थी। हालाँकि, उनकी आपत्ति उपरोक्त तर्क से अस्वीकृत हो गई थी, इसलिए "संगीत मकरंद" को सातवीं और दसवीं शताब्दी के बीच रखा है। इस बात पर चर्चा की गई है कि गांधार ग्राम की मूर्छनाओं के साथ उपयोग कैसे करते हैं, और यह पुष्टि की गई है कि वह उन्हें अपने राग में उपयोग करते हैं चूँकि उन्होंने केवल ग्रह (प्रारंभिक नोट) स्वर प्रदान किया है, उनके राग पूरी तरह से मूर्छना प्रणाली पर आधारित हैं। तीन से अधिक संपूर्ण रागों की समान शुरुआत और प्रमुख स्वर उनके तीन ग्रामों के उपयोग की पुष्टि करते हैं। यह राग कई अन्य रागों में से हैं। नारद ने ध्रुव गण, गीति या ग्राम राग के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा है। वह अपने वर्गीकरण की प्राथमिक प्रणाली के रूप में आठ रागों का उपयोग करते हैं, जिनमें से प्रत्येक की तीन पत्नियाँ होती हैं। यह प्रति प्रहर तीन घंटे और प्रति दिन और रात आठ प्रहर पर आधारित है। वर्ष की छह ऋतुओं के आधार पर दूसरे राग वर्गीकरण में छह राग और छह रागिनियाँ हैं। नारद रंगमंच का अध्ययन नहीं करते इसके बजाय, उन्हें संगीत में अधिक रुचि है। महत्व की दृष्टि से नृत्य संगीत के बाद दूसरे स्थान पर आता है। केवल नाटकीयता उनकी विशेषज्ञता का क्षेत्र नहीं है। नारद शिक्षित बुद्धिजीवियों के लिए संगीत लिखते हैं जो अच्छे संगीत की सराहना कर सकते हैं, जैसा कि नौ प्रतिष्ठित शिक्षाविदों या मशहूर हस्तियों की अदालत के वर्णन से प्रमाणित है। नारद की आध्यात्मिक प्रवृत्ति और विषय के प्रति उनका तांत्रिक दृष्टिकोण पूरे कार्य में स्पष्ट है। शिव-शक्ति तत्वों में से प्रत्येक शब्द और विषय मृदंग का प्रतिनिधित्व करता है।

नारद श्रोताओं को भी उपदेश देने के लिए उत्सुक रहते हैं। वह उन्हें कभी नहीं छोड़ते संगीतकार और श्रोता दोनों ही पुरस्कारों और कमियों में समान हिस्सा साझा करते हैं। उनके और उनके काम में तंत्र तत्व एक बार फिर उनके तालोत्पत्ति प्रकरण द्वारा मान्य है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनका ताल केवल एक संगत से अधिक माना जाता है, और संगीत से स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। इस कार्य में कर्मकांड, आध्यात्मिक और धार्मिक प्रवृत्ति अधिक मजबूत है। उपर्युक्त दावा इस तथ्य से समर्थित है कि हम नियमित रूप से रागों के साथ उनके निर्दिष्ट समय में शब्द नाम (ताल) और उचित मधुर संगीत सुनने से उपलब्धियों का अनुभव करते हैं। तथ्य यह है कि विषयों को सही ढंग से और व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित नहीं किया गया है, यह कार्य का एकमात्र दोष है। जबकि सभी विषयों को पहले समाहित किया गया है, परिभाषाएँ अंतिम खंड में शामिल की गई हैं। कुल मिलाकर, "संगीत मकरंद" एक अत्यधिक महत्वपूर्ण कार्य है जो "संगीत रत्नाकर" और "बृहद्देशी" को जोड़ता है। यद्यपि यह संगीत के व्यावहारिक पक्ष के संदर्भ में बहुत उपयोगी नहीं होगा, लेकिन इसमें अतीत के संगीत के बारे में कई मौलिक और विशिष्ट सिद्धांत शामिल हैं।

प्रथम अध्याय में शोधार्थी द्वारा पंडित नारद का परिचय देते हुए नारद का काल निर्धारण एवं परिचय स्पष्ट किया गया है । द्वितीय अध्याय मे शोधार्थी द्वारा सम्पूर्ण ग्रंथ का अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। नारद विरचित: संगीत मकरंद ग्रंथ को क्रमश: दो अध्याय संगीतध्याय व नृत्याध्याय तथा दोनों अध्यायों को चार चार पादों मे विभाजित किया गया है। तत्पश्चात शोधार्थी तथा शोधार्थी के मार्गदर्शक व शोधार्थी के पिता द्वारा व संगीत अथवा संस्कृत के गुनिजनों के संगीत मकरंद की व्याख्या का हिन्दी अनुवाद अन्वय व भावार्थ के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा संगीत मकरंद के अवनद्ध वाद्यों व अन्य वाद्यों का विवरण दिया गया है। देवर्षि नारद द्वारा रचित संगीत मकरंद ग्रंथ मे संगीत की सभी विधाओं पर प्रकाश डाला गया है। संगीत मकरंद के प्रथम अध्याय संगीतध्याय के चतुर्थ पाद मे वाद्य विशेष के अंतर्गत वाद्यों का वर्णन प्राप्त होता है, जिसमे सुषिर व अवनद्ध वाद्यों का नाम इस प्रकार से दिये गए है। सुषिर वाद्यों मे शृङ्गं, कहला, मुखरिका, उडु, मन्द्रा, करणा आदि। अवनद्ध वाद्यों मे मृदङ्ग, ददुर्र, पणव, झर्झरी, पटह, आलिङ्ग, ढक्का, डमरुगा, मडु, झर्झर, डिण्डिमा, कटका। चतुर्थ अध्याय के माध्यम से शोधार्थी द्वारा पंडित नारद कृत संगीत मकरंद मे वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण, के विषय में उपलब्ध माहिती व अध्ययन द्वारा प्राप्त सामाग्री से इस विषय को उजागर करने का प्रयास किया गया है। ताल के दश प्राण का वर्णन विभिन्न विद्वानो द्वारा विभिन्न संगीत ग्रन्थों मे किया गया है, परंतु ताल के दश प्राण मूल स्त्रोत नारद कृत संगीत मकरंद है। संगीत मकरंद ग्रंथ मे समान नाम वाले दशविधताल प्रबंधों का उल्लेख, बृहददेशी व मध्य काल के कुछ संगीत ग्रंथ जैसे 'संगीत रत्नाकर' व अन्य संगीत ग्रन्थों मे भी किया गया है। ताल के दस प्राणों में काल, मार्ग, क्रिया अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति, प्रस्तार का विस्तार पूर्वक विवरण प्राप्त होता है। पंडित नारद कृत संगीत मकरंद में वर्णित एकोत्तरशत ताल, दस ताल प्रबंध व ताल के दश प्राण से जुड़े प्रत्येक तथ्यो का आधार मानते हुये इस अध्याय का कार्य पूर्ण किया गया है।